

अध्यापकों के लिए क्रियात्मक अनुसंधान फ्रेमवर्क की उपयोगिता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. शिल्पी कुमारी

सहायक प्रोफेसर, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, भागलपुर

Email: kumarishilpy298@gmail.com



Received 15 September 2026

Accepted 20 September 2026

Published 28 September 2026

Corresponding Author:

डॉ शिल्पी कुमारी

Mail: kumarishilpy298@gmail.com

DOI: <https://doi.org/10.64880/pcjaict.v1i5.29>

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

सार (Abstract):

एक्शन रिसर्च शिक्षक के व्यावसायिक विकास तथा कक्षा-आधारित समस्याओं के समाधान के लिए एक प्रभावी और सहभागी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा प्री-सर्विस तथा इन-सर्विस शिक्षकों के लिए एक एकीकृत एक्शन रिसर्च फ्रेमवर्क विकसित किया जाता है, जो शिक्षक-प्रशिक्षण, कक्षा-आधारित समस्या-समाधान, चिंतनशील अभ्यास और निरंतर व्यावसायिक विकास को एक साझा संरचना में जोड़ता है। वर्तमान समय में शिक्षा की प्रकृति तेजी से परिवर्तित हो रही है। विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई एवं तकनीकी संदर्भों वाली कक्षाओं में शिक्षकों से केवल विषय-ज्ञान का संप्रेषण अपेक्षित नहीं है, बल्कि उनसे विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने, शिक्षण-अधिगम की समस्याओं की पहचान करने, नवाचारी शिक्षण रणनीतियों का प्रयोग करने तथा अपने अभ्यास का निरंतर मूल्यांकन करने की अपेक्षा की जाती है। इस संदर्भ में एक्शन रिसर्च शिक्षक के व्यावसायिक विकास और कक्षा-आधारित समस्या-समाधान के लिए एक प्रभावी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

कूटशब्द- क्रियात्मक अनुसंधान, शिक्षक शिक्षा, चिंतनशील अभ्यास, व्यावसायिक विकास

प्रस्तावना

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने वाले व्यक्ति तक सीमित नहीं रह गई है। आज शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को समझे, शिक्षण-अधिगम की बाधाओं की पहचान करे, उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों का चयन करे तथा अपने शिक्षण के प्रभाव का निरंतर मूल्यांकन करे। कक्षा एक जटिल सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण है। एक ही शिक्षण रणनीति अलग-अलग कक्षाओं, विद्यालयों और विद्यार्थियों के लिए समान परिणाम नहीं दे सकती है। इसलिए शिक्षक को अपने संदर्भ के अनुरूप शिक्षण संबंधी निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में क्रियात्मक अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया प्रदान करती है जिसके माध्यम से शिक्षक अपने वास्तविक कार्यक्षेत्र में उपस्थित समस्याओं की पहचान कर सकता है और

व्यवस्थित रूप से उनके समाधान का प्रयास कर सकता है। क्रियात्मक अनुसन्धान में समस्या की पहचान, संदर्भ का विश्लेषण, शोध-प्रश्न का निर्माण, कार्य-योजना, हस्तक्षेप, व्यवस्थित साक्ष्य-संग्रह, विश्लेषण, चिंतन तथा पुनः योजना को एक चक्रीय प्रक्रिया के रूप में शामिल किया जाता है। प्री-सर्विस शिक्षकों के लिए यह फ्रेमवर्क शिक्षण-अभ्यास, स्कूल इंटर्नशिप और मार्गदर्शक शिक्षक के सहयोग से जोड़ा जा सकता है, जबकि इन-सर्विस शिक्षकों के लिए इसे विद्यालय-आधारित व्यावसायिक विकास, सहकर्मि सहयोग और सतत व्यावसायिक अधिगम से जोड़ा जा सकता है। एक्शन रिसर्च शिक्षक को केवल पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन कर्ता न मानकर अपने अभ्यास का चिंतनशील शोधकर्ता और परिवर्तनकारी पेशेवर बनाने में सहायता कर सकती है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- प्री-सर्विस और इन-सर्विस शिक्षकों के लिए एक समेकित एक्शन रिसर्च फ्रेमवर्क विकसित करना।
- प्री-सर्विस एवं इन-सर्विस शिक्षकों की एक्शन रिसर्च संबंधी आवश्यकताओं की पहचान करना।
- चिंतनशील अभ्यास और कक्षा-आधारित समस्या-समाधान को एक्शन रिसर्च से जोड़ना।
- शिक्षक के व्यावसायिक विकास में एक्शन रिसर्च की संभावनाओं का विश्लेषण करना।
- शिक्षक शिक्षा संस्थानों और विद्यालयों के लिए एक व्यावहारिक कार्य-ढाँचा प्रस्तुत करना।
- बच्ची के शारीरिक, मानसिक नैतिक भाषागत (Aesthetic and linguistic) विकास को बढ़ावा देने के लिए अध्यापकों को तैयार करना।
- उन्हें बच्चों की देखभाल करने की तकनीक से परिचित कराना तथा उनकी आवश्यकताओं को पहचानने के लिए योग्य बनाना।

सेवा-पूर्व अध्यापक की अवधारणा

"सेवा-पूर्व अध्यापक" शब्द का शाब्दिक अर्थ "सेवा से पूर्व" या "नौकरी शुरू करने से पहले" का अध्यापक होता है। शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण (Professional Training) के क्षेत्र में यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा है जिसमें शिक्षण पेशे (Profession) में कदम रखने से पहले, उस क्षेत्र से जुड़े नियमों, कौशलों, तौर-तरीकों और सैद्धांतिक ज्ञान को सीखने के लिए जो प्रारंभिक प्रशिक्षण (Initial Training) लिया जाता है, उसे प्री-सर्विस अध्यापक कहा जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को शिक्षण कार्य या नौकरी के लिए मानसिक, व्यावहारिक और तकनीकी रूप से पूरी तरह तैयार करना होता है ताकि वह कार्यक्षेत्र में उतरते ही प्रभावी प्रदर्शन करने में सक्षम बन सके।

इसमें निम्नलिखित चरण शामिल होते हैं:

सैद्धांतिक अध्ययन (Theoretical Learning): इसके तहत छात्र-शिक्षक (Student-Teacher) बाल मनोविज्ञान (Child Psychology), शिक्षा के दार्शनिक आधार, और शिक्षण विधियों (Pedagogy) की किताबें पढ़ते हैं। वे समझते हैं कि बच्चे कैसे सीखते हैं और कक्षा का वातावरण कैसे नियंत्रित किया जाता है।

पाठ्यक्रम (Courses): भारत में प्री-सर्विस शिक्षा के प्रमुख उदाहरण B.Ed. (बैचलर ऑफ एजुकेशन), D.El.Ed. (डेलएड), और 4-वर्षीय इंटीग्रेटेड बीएड (ITEP) हैं। ये सभी प्री-सर्विस कोर्सेस की श्रेणी में आते हैं।

व्यावहारिक प्रशिक्षण या इंटर्नशिप (Teaching Practice / Internship): प्री-सर्विस का सबसे अहम हिस्सा यह है कि प्रशिक्षण के दौरान ही इन भावी शिक्षकों को कुछ महीनों के लिए वास्तविक स्कूलों में भेजा जाता है। वहाँ वे वरिष्ठ शिक्षकों की देखरेख में ब्लैकबोर्ड पर पढ़ाना, लेसन प्लान बनाना और कॉपियाँ जँचना सीखते हैं।

सेवा-पूर्व अध्यापक का महत्व

- i. **नींव का निर्माण:** यह पेशेवर सफर की पहली सीढ़ी है। जिस तरह एक डॉक्टर बनने के लिए एमबीबीएस की पढ़ाई और इंटरशिप जरूरी है, उसी तरह शिक्षक बनने के लिए प्री-सर्विस ट्रेनिंग अनिवार्य है।
- ii. **आत्मविश्वास में वृद्धि:** कक्षा में जाने से पहले यदि कोई व्यक्ति बच्चों को पढ़ाने के तरीके और चुनौतियों से परिचित हो जाए, तो उसका आत्मविश्वास कई गुना बढ़ जाता है।
- iii. **योग्य चयन:** यह चरण यह सुनिश्चित करता है कि केवल योग्य, प्रशिक्षित और मानसिक रूप से तैयार लोग ही शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनें।

सेवाकालीन अध्यापक की अवधारणा

एक सेवा-कालीन अध्यापक वह पेशेवर शिक्षक होता है जिसने अपनी औपचारिक 'प्री-सर्विस' (सेवा-पूर्व) ट्रेनिंग पूरी कर ली है, नौकरी पा ली है, और अब वह वास्तविक कक्षा-कक्ष (Classroom) में छात्रों को पढ़ा रहा है। यह शिक्षण पेशे का व्यावहारिक और सक्रिय चरण है। इस चरण में शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला नहीं रहता, बल्कि वह एक प्रशासक, मार्गदर्शक और सीखने वाला (Learner) भी बन जाता है, क्योंकि शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव लगातार आते रहते हैं। सेवा-कालीन अध्यापक की अवधारणा का सबसे बड़ा आधार 'सेवा-कालीन प्रशिक्षण' है। जब एक शिक्षक नौकरी में आ जाता है, तो उसका सीखना बंद नहीं होता है बल्कि समय के साथ शिक्षण पद्धतियों, तकनीकों और पाठ्यक्रम (Curriculum) में बदलाव आते हैं। इन बदलावों के अनुरूप खुद को ढालने के लिए शिक्षकों को जो प्रशिक्षण नौकरी के दौरान समय-समय पर दिया जाता है, उसे 'इन-सर्विस ट्रेनिंग' कहा जाता है।

इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- i. **कौशल का उन्नयन (Skill Enhancement):** शिक्षकों को नई शिक्षण तकनीकों, डिजिटल टूल्स (EdTech) और आधुनिक पेडागोजी से अवगत कराना।
- ii. **विषय का ज्ञान ताजा करना:** पाठ्यक्रम में होने वाले बदलावों या नए शोधों से शिक्षकों को रूबरू कराना।
- iii. **चुनौतियों का समाधान:** कक्षा प्रबंधन (Classroom Management), समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) और छात्रों के मनोवैज्ञानिक मुद्दों से निपटने के नए तरीके सिखाना।

सेवा-कालीन अध्यापक की मुख्य भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ

एक सेवा-कालीन अध्यापक के कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक होता है:

- i. **दैनिक शिक्षण (Daily Teaching):** लेसन प्लान तैयार करना, पाठ्यक्रम समय पर पूरा करना और छात्रों का मूल्यांकन करना।
- ii. **सतत व्यावसायिक विकास (CPD - Continuous Professional Development):** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के तहत हर शिक्षक के लिए यह अनिवार्य किया गया है कि वे अपने पेशेवर विकास के लिए साल में कुछ घंटे का प्रशिक्षण प्राप्त करें।
- iii. **नेतृत्व और मार्गदर्शन:** सहकर्मियों का मार्गदर्शन करना, स्कूल की सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों (Co-curricular activities) का संचालन करना और अभिभावक-शिक्षक बैठकों (PTM) में सक्रिय भूमिका निभाना।

भारत में सेवा-कालीन प्रशिक्षण के प्रमुख माध्यम

भारत में सेवा-कालीन अध्यापकों के कौशल को निखारने के लिए कई सरकारी और स्वायत्त संस्थाएं काम करती हैं:

- **DIET (जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान):** यह जिला स्तर पर शिक्षकों को सेवा-कालीन प्रशिक्षण देता है।
- **NCERT और SCERT:** ये संस्थान समय-समय पर विशेष कार्यशालाएं (Workshops) और ऑनलाइन पाठ्यक्रम (जैसे निष्ठा योजना - NISHTHA) आयोजित करते हैं।
- **विभिन्न मंच:** ऑनलाइन वेबिनार, कॉन्फ्रेंस और रिफ्रेशर कोर्सेज (Refresher Courses) के माध्यम से शिक्षक अपनी योग्यता को अपग्रेड करते हैं।

क्रियात्मक अनुसंधान के मुख्य चरण

इस पूरी प्रक्रिया को एक चक्र के रूप में चलाया जाता है, जिसके मुख्य चरण निम्नलिखित हैं:

- i. **समस्या की पहचान** : कक्षा या स्कूल की किसी अ समस्या को स्पष्ट रूप से चुनना (जैसे—छात्रों की अंग्रेजी पढ़ने में कमजोरी)।
- ii. **तथ्य जुटाना और विश्लेषण** : समस्या क्यों आ रही है, इसके कारणों का पता लगाना (बच्चों की कॉपियाँ देखना, टेस्ट लेना या बच्चों से बात करना)।
- iii. **कार्य योजना बनाना** : समस्या को दूर करने के लिए नई तकनीक या शिक्षण विधि की योजना तैयार करना (जैसे—रोचक कहानियों या ऑडियो-विजुअल टूल्स का इस्तेमाल करना)।
- iv. **योजना का क्रियान्वयन** : उस नई योजना को कक्षा में लागू करना।
- v. **मूल्यांकन और निष्कर्ष** : यह देखना कि नए तरीके अपनाने से समस्या हल हुई या नहीं। यदि सुधार हुआ, तो उसे अपनाया जाता है; अन्यथा योजना में फिर से बदलाव किया जाता है।

क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता

पारंपरिक शिक्षक शिक्षा में theory और practice के बीच अंतर एक महत्वपूर्ण चुनौती रहा है। शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विभिन्न शैक्षिक सिद्धांत, मनोवैज्ञानिक अवधारणाएँ और शिक्षण विधियाँ सिखाई जाती हैं, किंतु विद्यालय में प्रवेश करने पर शिक्षक को अनेक ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिनका समाधान केवल सैद्धांतिक ज्ञान से संभव नहीं होता। इन समस्याओं का समाधान अध्यापक क्रियात्मक अनुसंधान की सहायता से करता है

शिक्षक को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है:

विद्यार्थियों की कम कक्षा-सहभागिता, पढ़ने और लिखने में कठिनाई, गणितीय अवधारणाओं को समझने में समस्या, विद्यार्थियों में सीखने की कम रुचि, कक्षा प्रबंधन की समस्या, बहुभाषी कक्षा में संचार संबंधी कठिनाइयाँ, डिजिटल संसाधनों के प्रभावी उपयोग की कमी, समावेशी शिक्षा की चुनौतियाँ, formative assessment की सीमित प्रभावशीलता, विद्यार्थियों में उपस्थिति और motivation की समस्या।

क्रियात्मक अनुसंधान का महत्व

- i. **शिक्षण में सुधार**: यह शिक्षकों को लीक से हटकर नए और रचनात्मक तरीके खोजने के लिए प्रेरित करता है।
- ii. **व्यावसायिक विकास (Professional Growth)**: शिक्षक की समस्याओं को देखने की वैज्ञानिक दृष्टि विकसित होती है, जिससे वे अधिक कुशल बनते हैं।
- iii. **कम खर्चीला और त्वरित**: इसके लिए किसी बड़ी लैबोरेटरी या भारी बजट की जरूरत नहीं होती, इसे दैनिक कार्य के दौरान ही पूरा किया जा सकता है।

क्रियात्मक अनुसंधान की मुख्य विशेषताएँ

- i. **तात्कालिक समाधान (Immediate Solution)**: इसमें किसी सैद्धांतिक खोज का इंतजार नहीं किया जाता, बल्कि तुरंत आ रही समस्या का व्यावहारिक हल निकाला जाता है।
- ii. **लचीलापन (Flexibility)**: पारंपरिक शोध के नियम बहुत कठोर होते हैं, लेकिन क्रियात्मक अनुसंधान में परिस्थितियों के अनुसार रणनीतियों या तरीकों को आसानी से बदला जा सकता है।
- iii. **शोधकर्ता स्वयं practitioner होता है**: इसमें बाहर से कोई रिसर्चर नहीं आता; शिक्षक (जो खुद समस्या झेल रहा है) या प्रिंसिपल ही शोधकर्ता होता है।
- हैदायरा सीमित (Local Focus)**: इसके परिणाम पूरी दुनिया या देश पर लागू नहीं होते, बल्कि यह उस विशेष कक्षा, स्कूल या संस्था की समस्या तक सीमित होते हैं।

सेवा-पूर्व और सेवाकालीन अध्यापकों के लिए क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता

सेवा-पूर्व अध्यापकों के लिए:

- i. **व्यावहारिक यथार्थ से परिचय:** यह भावी अध्यापकों को सैद्धांतिक ज्ञान (Theoretical Knowledge) को वास्तविक कक्षा की परिस्थितियों (Classroom Realities) से जोड़ने में मदद करता है।
- ii. **चिंतनशील आदत का निर्माण:** यह शुरुआत से ही उनमें आत्म-मूल्यांकन (Self-Evaluation) और आलोचनात्मक सोच की संस्कृति विकसित करता है।

सेवाकालीन अध्यापकों के लिए:

- i. **व्यावसायिक विकास (Professional Growth):** यह सेवारत अध्यापकों को जड़ता (Stagnation) से बाहर निकालकर नवीनतम शिक्षण तकनीकों को आजमाने के लिए प्रेरित करता है।
- ii. **विद्यार्थियों की समस्या का समाधान:** यह विशेष रूप से कमजोर छात्रों के सीखने के अंतराल (Learning Gaps) को पाटने में अत्यंत प्रभावी है।

सुझाव

सेवाकालीन अध्यापक अध्यापन के दौरान में कक्षा कक्ष शिक्षण में हो रहे समस्याओं के समाधान के लिए क्रियात्मक अनुसंधान की सहायता लेनी चाहिए। साथ ही साथ इन किए गए क्रियात्मक अनुसंधान को प्राचार्य के द्वारा दस्तावेजीकरण किया जाना चाहिए जिससे भविष्य में अन्य अध्यापकों को मार्गदर्शन मिल सके। अध्यापकों को अपने विद्यालय में भिन्न-भिन्न आयामों के गतिविधियों पर क्रियात्मक अनुसंधान निरंतर करते रहना चाहिए। शिक्षा मंत्रालय के द्वारा बजट की व्यवस्था पर ध्यान देना चाहिए। क्रियात्मक अनुसंधान व्यावसायिक विकास के लिए भी आवश्यक है। क्रियात्मक अनुसंधान करने वाले अध्यापकों को समय-समय पर पुरस्कार देकर प्रोत्साहन किया जाना चाहिए।

14. निष्कर्ष (Conclusion)

क्रियात्मक अनुसंधान आजीवन व्यावसायिक शिक्षण के लिए एक शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है। जहाँ प्री-सर्विस फ्रेमवर्क चिंतनशील शिक्षण की नींव रखता है, वहीं इन-सर्विस फ्रेमवर्क अध्यापक को अपने स्कूलों के भीतर बौद्धिक नेता बनने के लिए सशक्त बनाता है। क्रियात्मक अनुसंधान किसी समस्या के रोने के बजाय, "समस्या को समझो, बदलो और सुधार करो" के सिद्धांत पर काम करने की एक जीवंत प्रक्रिया है।

REFERENCE

1. Carr, W., & Kemmis, S. (1986). *Becoming critical: Education, knowledge and action research*. Falmer Press.
2. Kemmis, S., & McTaggart, R. (Eds.). (1988). *The action research planner*. Deakin University Press.
3. Lewin, K. (1946). Action research and minority problems. *Journal of Social Issues*, 2(4), 34–46.
4. Schön, D. A. (1983). *The reflective practitioner: How professionals think in action*. Basic Books.
5. Stenhouse, L. (1975). *An introduction to curriculum research and development*. Heinemann.
6. Cochran-Smith, M., & Lytle, S. L. (2009). *Inquiry as stance: Practitioner research for the next generation*. Teachers College Press.
7. Ryan, T. G. (2016). The pre-service educator as action researcher and leader. *Action Researcher in Education*, 7, 1–13.
8. Toquero, C. M. D. (2021). "Real-world:" pre-service teachers' research competence and research difficulties in action research. *Journal of Applied Research in Higher Education*, 13(1), 126–148.

9. Levin, B. B., & Rock, T. C. (2003). The effects of collaborative action research on pre-service and experienced teacher partners in professional development schools. *Journal of Teacher Education*, 54(2), 135–149.
10. Lytle, S. L., & Cochran-Smith, M. (1992). Teacher research as a way of knowing. *Harvard Educational Review*, 62(4), 447–475.
11. Manfra, M. M. (2019). Action research and systematic, intentional change in teaching practice. *Review of Research in Education*, 43(1), 163–196.
12. Stringer, E. T. (2014). *Action research: A handbook for practitioners* (4th ed.). Sage Publications.
13. Reason, P., & Bradbury, H. (Eds.). (2008). *The SAGE handbook of action research: Participative inquiry and practice* (2nd ed.). SAGE.
14. Kitchen, J., & Stevens, D. (2008). Action research in teacher education: Two teacher-educators' practice action research as they introduce action research to preservice teachers. *Educational Action Research*, 16(1), 33–50.
15. Elliott, J. (1991). *Action research for educational change*. Open University

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.